भारतीय नृत्य कला का इतिहास

डॉ0 चिन्मय चट्टोपाध्याय

भूमिका

भारतीय नाट्य शास्त्र केवल मात्र नाटक नहीं, अपितु नृत्य संगीत आदि के संबंध में भी विस्तृत वर्णन उपलब्ध कराता है। नृत्य और संगीत जीवन का एक अभिन्न अंड्ग है। इसके अभाव में तो मनुष्य समाज का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास कदापि सम्भव नहीं है। यह हमें सभी प्रकार के चिन्ताओं से मुक्त कर एकाग्रता और आनन्दानुभूति कराता है। वैदिक युग से लेकर इस आधुनिक युग में भी हम अपना मानसिक और शारीरिक क्लेष इसी नृत्य और संगीत के माध्यम से दूर करते आ रहें हैं। वैदिक युग से लेकर इस आधुनिक युग में भी हम अपना मानसिक और शारीरिक क्लेष इसी नृत्य और संगीत के माध्यम से दूर करते आ रहें हैं। महादेव का नटराज के रूप में मिलना भी यही संकेत करता है। वाक् देवी की वीणा वैदिक युग के संगीत परम्परा का अकाट्य प्रमाण है। इसी प्रकार पर्वत के कन्दराओं और विभिन्न भारतीय सभ्यताओं में मिलने वाले नृत्य और संगीत के चिह्न और वाद्ययंत्र सभी इसी तरफ इशारा करतें हैं कि यहह मानव-जीवन का अमूल्य खजाना है। संगीत के विभिन्न वाद्ययंत्र भारतीय सभ्यता और संस्कृति के सदा पोशक और पालक रहें हैं। नृत्य हमारे जीवन को एक नये आयाम में ले जाने का मार्ग है।

अत: इसका संरक्षण और विकास मानव जाति का सर्वप्रथम पुनित कर्तव्य है।

भारतीय 'नृत्यशिल्प' को अभिनय और संगीत के समकालीन माना जाता रहा हैं। वैदिक युग से नृत्य का प्रचलन चला आ रहा हैं।

'अधि पेशांसि वपते नृतुरि वा' [1]

वाद्य यंत्र के सुर मे सुर मिलाकर सामगान के समय पुरनारीगण कर ताली द्वारा यज्ञवेदी परिक्रमण कर नृत्य परिवेषण करते थे। इसके अतिरिक्त वैदिक युग में विवाह, सीमान्तोन्नयन, यज्ञ-समाप्ति पश्चात् अवभूत स्नानोत्सव नृत्य, गीत और वाद्यादि अनुष्ठान का वर्णन है। महाभारत, रामायण में भी हमें नृत्यादि अनुष्ठान का वर्णन मिलता है। हड़प्पा, मोहनजोदड़ों के भग्नावषों में भी हमें नृत्य संबंधी प्रमाण प्राप्त होता है।

नृत्य किसी भी अनुष्ठान में शोभा की श्रीवृद्धि करता है। नाट्य शास्त्र में कहा गया है-

'' किन्तु शोभां जयन्तीत्यतो नृत्यं प्रवर्तिम्" [2]

नृत्य केवल अगं-प्रत्यड्ंग का सचालन मात्र नहीं, अपितु भाव का प्रकाशन है। त्रिपुरदाह नाटक के अभिनय से संतुष्ट आदिदेव ने कहा-

'' मयापीदं स्मृतं नृत्यं संध्याकालेषु नृत्यता।
नानाकरण संयुक्तैरडंगहारै विभूषितम्।।"[3]

ए0 एम0 महाविद्यालय, झालदाए पुरूलिया-पश्चिम बंगाल